



चींटी और कबूतर की कहानी

एक बार कड़कती गर्मियों में एक चींटी को बहुत प्यास लगी हुई थी। वो पानी की तलाश में एक नदी किनारे पहुंच गयी।

नदी में पानी पीने के लिए वो एक छोटी सी चट्टान पर चढ़ गयी और वहां पर वो फिसल गयी और फिसलते हुए नदी में जा गिरी। पानी का वहाव ज्यादा तेज़ होने से वो नदी में बहने लगी।

पास ही में एक पेड़ पर कबूतर बैठा हुआ था। उसने चींटी को नदी में गिरते हुए देख लिया।



कबूतर ने जल्दी से एक पत्ता तोड़ा और नदी में चींटी के पास फेंक दिया और चींटी उसपर चढ़ गयी। कुछ देर बाद चींटी किनारे लगी और वह पत्ते से उतर कर सूखी जमीन पर आ गयी। उसने पेड़ की तरफ देख और कबूतर को धन्यवाद दिया।



शाम को उसी दिन एक शिकारी जाल लेके कबूतर को पकड़ने आया।

कबूतर पेड़ पर आराम कर रहा था और उसको शिकारी के आने का कोई अंदाजा नहीं था। चींटी ने शिकारी को देख लिया और जल्दी से पास जाके उसके पाँव पर जोर से काटा।

चींटी के काटने पर शिकारी की चीख निकल गयी और कबूतर जाग गया और उड़ गया।

नैतिक शिक्षा: कर भला हो भला। अगर आप अच्छा करोगे तो आपके साथ भी अच्छा होगा।

www.padhopunjab.com